प्रबन्धक की ओर से

(चानणलाल सलूजा, प्रबन्धक धाम दर्शन)

परम आदरणीय सुन्दर साथ जी

सादर प्रणाम !

वैसे तो हमारे परनामी सम्प्रदाय के प्रचार के लिए तीन चार पत्रिकायें पहले से ही प्रकाशित हो रही हैं परन्तु बहुत से सुन्दर साथ की यह अभिलाषा रही है कि उन्हें साधारण भाषा में धार्मिक लेख पढ़ने को मिलने चाहिए और लेखक के विचार उनकी अपनी मौलिक भाषा ही में दिए जाने चाहिए। पत्रिका में जहाँ एक ओर विद्वत मण्डल के ज्ञानात्मक लेखों को आदर सहित स्थान दिया जाना चाहिए वहीं दूसरी ओर साधारण सुन्दर साथ के विचारों को भी उचित स्थान देकर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, विशेषतया युवा वर्ग के विचारों को जानने, समझने और उनकी शंकाओं के समाधान का विशेष प्रयास किया जाना चाहिए।

हमारे देश में दूर दूर फैले हुए समस्त सुन्दर साथ ने श्री निजानन्द आश्रम इंचोली में पूज्य श्री १०८ महाराज श्री रामरतन दास जी की पावन स्मृति में प्रत्येक वर्ष मनाये जाने वाले भण्डारे (महोत्सव) के आयोजन पर हमारे ट्रस्ट को जिस प्रकार आर्थिक और साकारात्मक योगदान दिया है उस से हमारा मनोबल बढ़ा है। श्री महाराज की स्मृति में शोक दिवस की विशेष सभा में जिस प्रकार सुन्दर साथ अपनी भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करता है और श्री महाराज जी के चरणों में व्यतीत किये अपने सार्थिक क्षणों में महाराज जी की जिस अपूर्व निधि (वाणी) का बोध कराता है उस से प्रेरणा प्राप्त कर ही हमारे ट्रस्ट ने यह निर्णय किया है कि श्री महाराज के जीवन चरित्र और धर्म जागनी के महान कार्यों की जानकारी समस्त सुन्दर साथ तक पहुंचाने के लिये पत्रिका की व्यवस्था की जाये। ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री प्राण नाथ जूनियर हाई स्कूल के नाम से इंचोली में एक विद्यालय चल रहा है जिसे सरकार द्वारा मान्यता भी प्राप्त हो चुकी है। विद्यालय किस प्रकार दिन प्रति दिन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है इसका पूर्ण विवरण भी हम धाम दर्शन के अगले अंक में प्रकाशित करते जा रहे हैं।

Nijanand App

उत्तर भारत में अपने समाज की ओर से अभी तक कोई नियमित पत्रिका नहीं निकाली जा सकी। यह बात भी विशेषरूप से सोचने का विषय है कि हमारी धर्म पत्रिकाओं में ऐसी सामग्री को उचित स्थान नहीं मिलता जो सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठा सके। यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज अनेक समाज विरोधी तत्व हमारे समाज को कलंकित करने का प्रयास कर रहे हैं और धर्म की आड़ में सामान्य सुन्दर साथ की भावनाओं के साथ मन चाहा खिलवाड़ कर रहे हैं अतः हमारा यह भरसक प्रयास होगा कि हम धाम दर्शन के माध्यम द्वारा सरल भाषा में अच्छे और सुन्दर विचारों का प्रचार करें और पूज्य श्री १०८ महाराज श्री रामरतन दास जी द्वारा जलाई गई धर्म ज्योति के प्रकाश को घर घर पहुंचायें एवं महामति श्री प्राणनाथ जी की वाणी ही को अपना सर्वस्व एवं एक मात्र इष्ट मानें।

हम सुन्दर साथ को सर्वोपरि मानते हैं अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप धाम दर्शन की सफलता में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें और हमारी त्रुटियों, खामियों की ओर तुरन्त हमारा ध्यान दिलायें जिसके सुधार का हम आपको आश्वासन देते हैं।

भजन

—प्रोफेसर प्रकाश

(तर्ज—कव्वाली)

मुझे रास आगया है तेरे दर पे सर झुकाना।
तुझे मिल गई है रहें मुझे मिल गया ठिकाना॥
अपनी रहों की खातिर, पिया धाम से चल के आये,
पकड़ा है हाथ मेरा, अब धाम ले के जाना।
मुझे रास आ गया है ... ... ॥
तेरी आशकी से पहले, मुझे कौन जानता था,
बैठे हो आके दिल में, मेरा फकत बहाना।
मुझे रास आगया है तेरे दर पे सर झुकाना॥
तेरे इश्क ने अब मुझको पागल बना दिया है,
महबूब अब हैं अपने, रूठे अगर जमाना।
मुझे रास आ गया है..... ॥
ये सर वह सर नहीं है, रख कर कभी उठालूं,
सर रख दिया है मैंने, आता नहीं उठाना।
मुझे रास आगया है तेरे दर पे सर झुकाना॥

Nijanand App